हिन्दी विभाग
कालिम्पोंग कॉलेज, कालिम्पोंग
पाठ्यक्रम का उद्देश्य और परिणाम

हिन्दी विभाग की स्थापना महाविद्यालय की स्थापना के साथ 1962 में हुई है। 1962 में हिन्दी विभाग में पाठ्यक्रम VERNACULAR के रूप में पढ़ाया जाता था।_इस समय विभाग में एकमात्र स्थायी प्राध्यापक श्री मनोहर प्रसाद जयसवाल जी थे। 1984 से हिन्दी को GENERAL SUBJECT (सामान्य विषय) के रूप में पढ़ाया जाने लगा। 1985 में श्री आशुतोष सिंह सहायक प्राध्यापक के रूप में नियुक्त हुए। 2000 में डॉ शोभा लिम्बू योल्मों की सहायक प्राध्यापक के रूप में नियुक्ति हुई। तत्पश्चात सुश्री कंचन शर्मा की इस विभाग में नियुक्ति हुई। कुछ वर्षों में इनका विश्वविद्यालय में नियुक्ति होने पर इनके रिक्त स्थान पर डॉ मंटू कुमार साव की नियुक्ति हुई। वर्तमान समय में विभागीय लाइब्रेरी में लगभग 200 से अधिक पुस्तके और पत्रिकाएँ हैं। _पाठ्यक्रम में सामान्य और MIL के साथ CBCS पाठ्यक्रम के अनुरूप LCC1,LCC2,AECC2,DSC,DSE, GE,SEC पत्रों की पठन-पठान होती है।

हिन्दी विभाग का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को समय और संघर्ष के लिए तैयार करना। भविष्य के सुखद जीवन के लिए तैयार करना। अच्छे से बोलना, लिखना, पढ़ना के साथ साथ परिवार, समाज और देश के निर्माण के लिए एक समझ पैदा करना। हिन्दी लाइब्रेरी के माध्यम से आने वाले परीक्षाओं के लिए सूत्र तैयार करना और समझ को पैदा करना। पाठ्यक्रम को रोजगार के साथ जोड़कर शिक्षण पद्धति को विकसित कर विद्यार्थों के सामने प्रस्तुत करना आदि।

पाठ्यक्रम की रूपरेखा और उद्देश्य

1st sem

हिन्दी साहित्य का इतिहास (सम्पूर्ण)-DSC -1

1-कालविभाजन और नामकरण
-आदिकालीन काव्य धाराएँ
सिद्ध-
नाथ-
जैन-
रासो काव्य
आदिकालीन हिन्दी की सामान्य विशेषताएँ-
2- भक्ति आंदोलन
सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि-
प्रमुख निर्गुण कवि-
प्रमुख सगुण कवि-
भक्तिकाल की सामान्य विशेषता –
3- रीतिकाल की ऐतिहासिकपृष्ठभूमि –
रीतिबद्ध –

रीतिसिद्ध –
रीतिमुक्त-
4- 1857 की स्वतन्त्रता संघर्ष और हिन्दी नवजागरण
भारतेन्दु यूग –
द्विवेदी युग-
द्विवेदी युग के प्रमुख गद्य लेखक और कवि-
मैथिली शरण गुप्त और राष्ट्रीय काव्य –
5- हिन्दी के गद्य विधाओं का उद्भव और विकास –
उपन्यास –
कहानी-
नाटक-
निबंध-

<u>परिणाम –</u>

1-हिन्दी साहित्य के इतिहास के सभी कालों का अध्ययन हो पाएगा
2-कालों के आंदोलन और पृष्ठभूमि को जान पाएगा।
3- सभी कालों के कवियों के बारे में जान पाएंगे
4 1857 की क्रांति की जानकारी मिल पाएगी।
5- हिन्दी के गद्य के विभिन्न विधा को अच्छी तरह से समझ पाएंगे।

<u>सूर्य कान्त त्रिपाठी निराला DSC-2</u>

कविताएँ –
जुही की कली –
जागो फिर एक बार-
बादल-राग-6-
वर दे वीणा वादिनी वर दे !-
तोड़ती पत्थर-
गहन है यह अंधकारा –
निराला के व्यक्तित्व और सृजनता पर विश्लेषण -

परिणाम

1-आधुनिक काल के छायावादी और प्रगतिवादी कवि के रूप में सूर्यकांत त्रिपाठी को जान पाएंगे।
2- कविता के माध्यम से समय के संघर्ष और सामाजिक सरोकार को जान पाएंगे
3- व्याख्या शिक्षण से विद्यार्थियों के स्किल को उन्नत किया जा सकता है।

<u>हिन्दी भाषा और साहित्य (MIL) LCC-1</u>

1-हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति
2-हिन्दी भाषा की विशेषताएं –
क्रिया-
विभक्ति-
सर्वनाम –
अव्यय संबंधी-
3-हिन्दी की वर्ण – व्यवस्था-
4- मुहावरे

लोकोक्तियाँ-
पत्र-लेखन –
5- कबीर 4 दोहें-
6-तुलसीदास (4)-
7- रहीम (4)-
बिहारी(4)
8-प्रसाद/हिमाद्रि –
9-निराला/ध्वनि-
10-नागार्जुन/अकाल-
11केदार नाथ सिंह –
एक पारिवारिक-
12- प्रेमचंद / दो बैलो की कथा-
13- महादेवी/गिल्लू –
15-रेणु/ ठेस –
16-अश्क/ अधिकार का रक्षक –

<u>परिणाम</u>

1-हिन्दी के उत्पत्ति की जानकारी मिल सकेगी
2- व्याकरण से जुड़ी सारी नियमो की जानकारी मिल सकेगी
3- पत्र लेखन के मधायम से विद्यार्थी पत्र लिखने की कला से अवगत हो सकते हैं
4- मध्यकालीन और आधुनिक कवियों के समय और समाज को जान पाएंगे ।
5-कथा विधा के द्वारा पाठ कला को भी सीख सकता है।
6- नाटक के माध्यम से संवाद काला और मंचन कला को सीख सकता हैं

2nd sem

<u>मध्यकालीन हिन्दी कविता DSC-3</u>

1 कबीरदास (4 पद)-
2 सूरदास (4 पद)-
3-तुलसीदास (4 पद)-
4-मीराबाई (4 पद)-
5- रसखान (4 पद)-
6-बिहारी(4 पद)-
7-भूषण(4 पद)-
8-घनानन्द (4 पद)-

<u>परिणाम</u>

1-भक्तिकाल के कवियों के माध्यम से उस समय के परिवेश को जान पाएगा
2- रीतिकाल के कवियों के माध्यम से उस समय के परिवेश को जान पाएगा
3- विभिन्न काल के भाषा ज्ञान को जान पाएगा।

<u>हिन्दी व्याकरण और सम्प्रेषण (MIL) AECC -2</u>

1-हिन्दी व्याकरण एवं रचना
संज्ञा-
सर्वनाम-
विशेषण-
क्रिया-

अव्यय-
उपसर्ग-
प्रत्यय-
समस-
पर्यायवाची शब्द-
विलोम शब्द-
अनेक के लिए एक शब्द-
शुध्दिकरण-
मुहावरे –
लोकोक्तियाँ-
पल्लवन-
संक्षेपण –
2-सम्प्रेषण की अवधारण और महत्व-
3- सम्प्रेषण के प्रकार-
4- साक्षात्कार,
भाषण –कला
रचनात्मक लेखन –

<u>परिणाम</u>

1-हिन्दी के उत्पत्ति की जानकारी मिल सकेगी
2- व्याकरण से जुड़ी सारी नियमो की जानकारी मिल सकेगी
3- पत्र लेखन के मधायम से विद्यार्थी पत्र लिखने की कला से अवगत हो सकते हैं।
4- पल्लवन और संक्षेपन के माध्यम से लेखन कला को उन्नत किया जा सकता है।
5-सम्प्रेषण और भाषण कला के मध्यम से मौखिक कला को भी परिष्कार किया जा सकता है।

3rd sem

<u>आधुनिक हिन्दी कविता DSC-5</u>

1-भारतेन्दु हरिश्चंद्र
भारत :अतीत और वर्तमान-
अंधेर नागरी का गीत –
2- मैथिली शरण गुप्त
भारत भारती छंद-14,18-
3-जयशंकर प्रसाद
अरुण यह मधुमय-
तुम कनक किरण –
4-सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
भगवान बुद्ध के प्रति-
बादल राग-
5-अज्ञेय
नन्दा देवी-6-
एक सन्नाटा बुनता हूँ-
6-नागार्जुन
चंदू मैंने सपना देखा-
गुलाबी चूड़िया –
7- रघुवीर सहाय

मेरे प्रतिनिधि-
पीठ –
8-धूमिल
गाँव-
रोटी और संसद –

परिणाम

1-आधुनिक साहित्य के मधायम से गुलाम भारत की तस्वीर देखी जा सकती है।
2- छायावादी संस्कार से परिचय किया सकता है।
3- प्रयोगवादी चिंतन को जान पाएंगे।
4-प्रगतिवादी तथ्यों को साहित्य में योगदान को जान पाएंगे
5- आजादी के बाद उठे आम जन के मन की कुंठा को समझ पाएंगे

हिन्दी भाषा शिक्षण SEC -1

1-भाषा शिक्षण का संदर्भ
2 भाषा शिक्षण के आधारभूत संकल्पनाएँ –
3- भाषण शिक्षण की विधियाँ –
भाषा कौशल-
भाषा कौशल और शिक्षण –
व्याकरण अनुवाद विधि-
मौखिक वार्तालाप विधि
संरचनात्मक विधि-
द्विभाषिक शिक्षण विधि
प्रत्यक्ष विधि –
4- हिन्दी शिक्षण
मातृ भाषा शिक्षण-
सजातीय और विजातीय भाषा में शिक्षण –
विदेशी भाषा में हिन्दी शिक्षण

परिणाम

1-भाषा शिक्षण के महत्व को जान पाएंगे।
2- भाषा कौशल की कला को सीख पाएंगे
3- मातृ भाषा के महत्व को जान पाएंगे'
4- विदेश में हिन्दी भाषा और शिक्षण के महत्व पर जानकारी हासिल कर पाएंगे।

हिन्दी भाषा और सम्प्रेषण (MIL-II)(LCC-1 , p -2)

1-भाषा की परिभाषा, प्रकृति एवं विविध रूप –
2- हिन्दी भाषा की विशेषताएँ –
क्रिया-
विभक्ति –
सर्वनाम-
विशेषण-
अव्यय संबंधी –
3- हिन्दी की वर्ण व्यवस्था-
4- स्वर के प्रकार –
ह्रस्व , दीर्घ, संयुक्त

5- व्यंजन के प्रकार –
स्पर्श, अंतस्थ, ऊष्ण, अल्पप्राण, महाप्राण, घोष, अघोष, संगम, बालाघाट,संधि-
6- हिन्दी वाक्य रचना-
वाक्य और उपवाक्य –
वाक्य भेद-
वाक्य का रूपांतर
7- भावार्थ-
व्याख्या-
आशय लेखन-
विविध प्रकार पत्र लेखन –

<u>परिणाम</u>

1-हिन्दी के उत्पत्ति की जानकारी मिल सकेगी
2- व्याकरण से जुड़ी सारी नियमो की जानकारी मिल सकेगी
3- पत्र लेखन के मधायम से विद्यार्थी पत्र लिखने की कला से अवगत हो सकते हैं।
4- पल्लवन और संक्षेपन के माध्यम से लेखन कला को उन्नत किया जा सकता है।
5-सम्प्रेषण और भाषण कला के मध्यम से मौखिक कला को भी परिष्कार किया जा सकता है।

4th sem

<u>हिन्दी गद्य साहित्य DSC-7</u>

1- उपन्यास
सुनीता- जैनेन्द्र कुमार-
2- कहानी
आहुति- प्रेमचंद –
वापसी –उषा प्रियम्वदा –
3- निबंध
लोभ और प्रीति-शुक्ल
शिरीष के फूल – द्विवेदी
4- नाटक
बकरी- सक्सेना -

<u>परिणाम</u>

1-उपन्यास कला के माध्यम से सुनीता की समीक्षा कर सकते हैं।
2-कहानी कला के माध्यम से आहुति और वापसी कहानी की समीक्षा कर सकते हैं।
-निबंध कला के माध्यम से लोभ और प्रीति एवं शिरीष के फूल निबंध की समीक्षा कर सकते हैं।
4-नाटक कला को समझ पाएंगे।

<u>रचनात्मक लेखन SEC-2</u>

1-रचनात्मक लेखन : स्वरूप और सिद्धान्त –
भाषा एवं विचार-
विविध अभिव्यक्ति क्षेत्र –
साहित्य, पत्रकारिता, विज्ञापन, विविध गद्य
जन भाषा और लोकप्रिय संस्कृति
लेखन के विविध रूप-
नाट्य पाठ-
2- रचना कौशल विश्लेषण –

शब्द शक्ति, प्रतीक , बिम्ब, अलंकार और वक्रताएं
3-विविध विधाओं का व्यावहारिक अध्ययन
कविता –
कथा साहित्य-
नाट्यसाहित्य-
विविध गद्य-
बाल साहित्य-
4-सूचना तंत्र के लेखन-
प्रिंट मीडिया –

परिणाम

1-रचनात्मक लेखन की मुख्य बिन्दुओं को समझ सकते हैं।
2- जन भाषा और लोकप्रिय संस्कृति के अंतर को समझ पाएंगे।
3- शब्द शक्ति के महत्व को जान सकते हैं
4-व्यावहारिक अध्ययन के मधायम से कथा, काव्य, नाट्य विधा के विविध आयामों को जान पाएंगे।
5-सूचना तंत्र के विविध उपकारणों को समझ पाएंगे ।

5th sem

कबीरदास DSE -1

कबीर ग्रंथावली-सखी 20
गुरुदेव के अंग (आरंभिक 4 सखी)-
सूरा तान के अंग (आरंभिक 4 सखी)-
परचा के अंग (आरंभिक 4 सखी)-
मन के अंग (आरंभिक 4 सखी)-
माया के अंग (आरंभिक 4 सखी)-
एवं 10 पद (आरंभिक)-

परिणाम

1-कबीर स्वरा रचित बीजक के द्वारा साखी सबद और रमैनी की जानकारी मिल सकती है।
2- साखी मे साध्यम से गुरु के महत्व,मन की व्यथा और माया के बढ़ा को जान सकते हैं ।
3- पद पठन के मधायम से कबीरदास के समय से परिचय हो सकते हैं ।

पाश्चात्य दर्शन चिंतन एवं हिन्दी साहित्य DSE -2

1-अभिव्यंजना वाद
2- स्वच्छंदतावाद
3-अस्तित्ववाद
4-मनोविश्लेषणवाद-
5-मार्क्सवाद –
6-आधुनिकतावाद –
7-कल्पना, बिम्ब , फैन्तसी
8- मिथक एवं प्रतीक

परिणाम

1-आधुनिकता के विविध आयाम को जान पाएंगे।
2- साहित्य के विविध आयामों में मानवता की अनुभूति और अभिव्यक्ति कैसे हो सकता है ये जान पाएंगे।
3- साहित्य में कल्पना, बिम्ब और प्रतीक की क्या भूमिका है ये जान पाएंगे

हिन्दी पत्रकारिता SEC-3

1-पत्रकारिता अर्थ
अवधारणा और महत्व –
2-हिन्दी पत्रकारिता के विविध चरण-स्वतन्त्रता पूर्व , स्वतरंतरोत्तर युग , परिचय और प्रवृत्तिया
3- पत्रकारिता में अनुवाद की भूमिका
4-महत्वपूर्ण पत्र
बनारस अखबार
सरस्वती ,
कर्मवीर
हंस

परिणाम

1-साहित्य और मानव जीवन में पत्रकारिता का क्या महत्व है यह जा पाएंगे।
2-पत्रकारिता के विकास क्रम को जान पाएंगे।
3- पत्रकारिता में अनुवाद के महत्व को जान पाएंगे।

6th **sem**

हिन्दी गद्य साहित्य DSE-3

हिन्दी रेखाचित्र
1-शिवपूजन सहाय- महाकवि जयशंकर प्रसाद –
2-बनारसीदास चतुर्वेदी
बाईस वर्ष बाद-
3-हजारी प्रसाद द्विवेदी
एक कुटा और एक मैना
4-महादेवी वर्मा
गिल्लू

परिणाम

1-हिन्दी रेखा चित्र को परिभाषित कर सकते हैं।
2-रेखाचित्र के माध्यम से उपरयुक्त रेखाचित्र को समीक्षा कर सकते हैं।
3-रेखाचित्र में मानुषी, समय , जीव के भावनाओं को विभिन्न तरीके से समझ सकते हैं।

आधुनिक भारतीय साहित्य GE -2

1-स्वाधीनता संग्राम और भारतीय नवजागरण और प्रभाव
2- भारतीय साहित्य और राष्ट्रीयता –
आनंद मठ- बंकिम चन्द्र
सुब्रमण्यम भारती की कवितायें-
यह है भारत देश हमारा
वंदे मातरम,
निर्भय
आजादी का एक पहलू

परिणाम

1-आजादी की लड़ाई में हिन्दी नवजागरण की भूमिका को जान पाएंगे ।

2- भारतीय समाज और राष्ट्रीयता की भावना को समझ पाएंगे।
3- समाज के उत्थान में आनंद मठ की भूमिका को समझ पाएंगे ।

संभाषण कला SEC -4

संभाषण का अर्थ –

संभाषण के विभिन्न रूप –
वार्तालाप
व्याख्यान-
वाद-विवाद –
एकालाप –
अवाचिक-
अभिव्यक्ति –
जनसंबोधन –

संभाषण कला के प्रमुख अपादान
यथेष्ट भाषा ज्ञान
मानक उच्चारण –
सटीक प्रस्तुति
अंतराल ध्वनि –
वेग-
लहजा -
संभाषण कला के विविध रूप –
उद्घोषणा कला –
आँखों देखा हाल –
संचालन –
वाचन कला –
समाचार वाचन-
मंचीय वाचन –
वाद-विवाद प्रतियोगिता -
समूह संवाद –

परिणाम

1- साहित्य और व्यावहारिक ज्ञान में संभाषण की भूमिका को समझ सकते हैं
2- संभाषण के विविध रूपों के महत्व को समझ सकेंगे।
3- संभाषण कला के विविध उपकरणो को व्यावहारिक जीवन में उपयोग कर सकते हैं।
4- मंच पर संभाषण की उपयोगिता को पेश कर सकते हैं।